# डॉ. राधाकृष्णन का शिक्षा दर्शन आर आधुनिक समय में उसकी प्रासंगिकता

**डॉ. ऋतु बाला** (शोध निर्देशिक)
**रमेश कुमार थोरी** (शोधार्थी)

**सारांश** :–

*प्रस्तुत शोधकार्य डॉ. राधाकृष्णन के शिक्षा दर्शन और आधुनिक समय में उसकी प्रासंगिकता विषय पर किया गया है। इस हेतु राधाकृष्णन जी के दार्शनिक विचारों, शिक्षा के उदेश्य, शिक्षण पद्वतियों, शिक्षक शिक्षार्थी सम्बन्ध, पाठ्यक्रम आदि को अधार मानकर विश्लेषण किया गया है। निष्कर्ष रूप में देखा गया कि डॉ. राधाकृष्णन जी के दार्शनिक विचारों की वर्तमान शिक्षा प्रणाली में महत्ती भूमिका है।*

## प्रस्तावना :–

शिक्षा किसी भी समाज का दर्पण होता है। प्रत्येक राष्ट्र की उन्नति उसकी शिक्षा व्यवस्था पर निर्भर रहती है। जिस राष्ट्र में जैसी शिक्षा–व्यवस्था होगी, वैसा ही वह राष्ट्र तथा उसके नागरिक होंगे। सौभाग्यवश भारतीय ऋषियों, सन्तों और समाज–सुधारकों ने समय–समय पर अपने देश की शिक्षा के लिए बहुत कुछ किया है, परन्तु यह निर्विवाद तथ्य है कि भारत की वर्तमान शिक्षा–प्रणाली अंग्रेजों द्वारा आरोपित एक विदेशी शिक्षा–प्रणाली है। आज इस बात की आवश्यकता है कि यदि हम वास्तविक अर्थों में भारतीय नागरिक चाहते हैं तो प्रचलित शिक्षा–पद्धति की समीक्षा करके उसका उन्मूलन करना तथा उसके स्थान पर एक ऐसी शिक्षा–प्रणाली को विकसित करना होगा, जिसका आधार भारतीय संस्कृति हो। यदि भावी नागरिकों में भारतीयता तथा राष्ट्रीयता के गुणों को विकसित करना है तो वर्तमान शिक्षा–पद्धति में परिवर्तन अनिवार्य है। आज चारों दिशाओं से भारतीय चिन्तक व शिक्षाविद् भारतीयकरण की माँग कर रहे हैं तथा समय की भी यही माँग है।

**समस्या कथन** :– प्रस्तुत शोध समस्या का कथन है **"डॉ. राधाकृष्णन के शिक्षा दर्शन और आधुनिक समय में उसकी प्रासंगिकता"।**

**अध्ययन के उद्देश्य** :–

1. डॉ.राधाकृष्णन् कृत मूल ग्रंथों के आधार पर उनके दार्शनिक विचारों का अध्ययन करना।
2. डॉ.राधाकृष्णन् के द्वारा प्रदत शैक्षिक दर्शन का वर्तमान पाठ्यक्रम में महत्व की विवेचना करना ।

**अध्ययन की परिकल्पनाएँ** :–

प्रस्तुत शोध कार्य दार्शनिक व ऐतिहासिक है, इसलिए इसमें परिकल्पनाओं का निर्माण नहीं किया गया।

**अध्ययन की विधि**

प्रस्तुत शोध कार्य में ऐतिहासिक अनुसंधान विधि को अपनाया जायेगा इसके अंतर्गत डॉ० राधाकृष्णन् की शिक्षा सम्बन्धी विचारधारा का वैज्ञानिक अध्ययन किया गया है,

**निश्कर्श** :–**१. डॉ. राधाकृष्णन् की दार्शनिक विचारधारा:**

डॉ. राधाकृष्णन् एक महान दार्शनिक थे। उन्होंने विभिन्न दर्शनों की प्रवृत्तियों का गहन अध्ययन करके अपने दार्शनिक चिन्तन में समन्वयात्मक दृष्टिकोण अपनाया। पूर्वतय एवं पाश्चात्य विचारधाराओं का समन्वय करने में उनका एक महती योगदान रहा है। पाश्चात्य दर्शन का लक्ष्य दार्शनिक प्रश्नों के समाधान ढूँढने का है तो भारतीय दर्शन का उद्देश्य आत्मा–साक्षात्कार करना रहा है। डॉ० राधाकृष्णन् ने दर्शन की परिधि में तर्कशास्त्र, सौंदर्यशास्त्र, समाजदर्शन तथा अध्यात्म विद्या, इन सभी का समावेश किया है।

डॉ. राधाकृष्णन् पर शंकराचार्य के अद्वैतवाद का बहुत प्रभाव पड़ा है। उनके दार्शनिक विचारों में तत्व मीमांसा एवं ज्ञान मीमांसा अवधारणाओं का बड़ा महत्व है। शंकराचार्य के समान इन्होंने भी ब्रह्म तत्व को परमतत्व माना है। ईश्वर वह शाश्वत चेतना है जो वस्तु जगत में समावेश और व्यक्तिक्रमण करती है। डॉ० राधाकृष्णन् ने ब्रह्म के वास्तविक स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए दो लक्षण बताए हैं–

१. स्वरूप लक्षण।

२. तटस्थ लक्षण।

इन दोनों लक्षणों के आधार पर ब्रह्म के दो रूप बनते हैं–

१. निर्गुण या परब्रह्म।

२. सगुण या अपर ब्रह्म।

सगुण रूप को ईश्वर कहा जाता है तथा विश्व को ईश्वर रूप माना जाता है। ब्रह्म भी माया के प्रभाव से सगुण रूप धारण करता है। माया ब्रह्म की बीज शक्ति है जिसमें अपने स्वरूप को न जानने वाले सांसारिक जीवन शयन करते हैं। डॉ. राधाकृष्णन् मानव जीवन की उपयोगिता को स्वीकार करते हैं मनुष्य को अपने अहम् से ऊपर उठकर सर्वोच्च आत्मा तक पहुँचना होगा। जब मनुष्य अपनी व्यक्तिगत सत्ता को भगवान के साथ एकाकार कर देता है जब वह त्रिगुणात्मक प्रकृति से ऊपर उठ जाता है और सांसारिक बन्धनों से मुक्त हो जाता है।

डॉ. राधाकृष्णन् मानव जीवन के लक्ष्य की ओर संकेत करते हुए कहते हैं कि मानव जीवन के तीन मूल्य माने गये हैं।

१. सत्य।

२. शिवम्।

३. सुन्दरम्।

इन तीनों की प्राप्ति ही मानव जीवन का परम लक्ष्य है।

**२ डॉ. राधाकृष्णन के शैक्षिक दर्शन का आधुनिक भारतीय शिक्षा में योगदान**

आधुनिक भारत के संदर्भ में डॉ० राधाकृष्णन् के शैक्षिक दर्शन की प्रासंगिकता को हम इस प्रकार देख सकते हैं। डॉ० राधाकृष्णन् ने शिक्षा दर्शनार्थ और उसका आधुनिक शिक्षा के ऊपर प्रभाव की चर्चा की। पूरी शिक्षा की रचना यह वर्णन करती है कि भारत को उस शिक्षा दर्शनार्थ की आवश्यकता है जिससे वह बदलते हुए समय के साथ अपनी गति को बनाए रख सके। उन्होंने सभी तरह की स्वतंत्र खोज भावनाओं जो कि प्रयोगात्मक दर्शनार्थ धार्मिक और सामाजिक आस्थाओं के साथ जुड़े हुए थे उनका प्रोत्साहन किया। उनके द्वारा की गई खोज शिक्षा के क्षेत्र में सटीक उन्नति और सम्पूर्ण व्यक्तिगत और आत्मीयता की खोज थी।

**उपयोगिता –**

शिक्षक शिक्षार्थी के लिए शिक्षण प्रक्रिया के तीन चरण होते हैं– शिक्षक पाठ्यक्रम और शिक्षार्थी। इन तीनों में सामंजस्य उत्पन्न होने पर ही उचित शिक्षा की प्राप्ती सम्भव होती है। इसके लिए जरूरी होता है। कैसा पाठ्यक्रम हो, जो बालकों का सर्वांगीण विकास कर सके। कैसी शिक्षण विधि हो जो विद्यार्थी को रूचिकर लगे और दिये गये ज्ञान को आत्मसात करले। इस सबके बाद शिक्षक का व्यवहार जो कि शिक्षण प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण चर है, क्योंकि विद्यार्थी एक शिक्षक को ही अपना आदर्श मानकर चलते हैं। इसलिए आवश्यक होता है कि शिक्षक व्यवहार आदर्श प्रस्तुत करने वाला हो।

डॉ. राधाकृष्ण जी के शैक्षिक व राष्ट्रीय दर्शन के अन्तर्गत इन सभी बातों का अध्ययन किया गया है। शिक्षण प्रक्रिया के अलावा शिक्षक–शिक्षार्थी कर्तव्यों का भी अध्ययन किया गया है।

**भावी शोध हेतु सुझाव –** वर्तमान अध्ययन में डॉ. राधाकृष्णन् को महान् शिक्षा दार्शनिक के रूप में प्रस्तुत किया है। समय एवं साधन की सीमाओं के कारण यह अध्ययन सीमित ही है। अत: डॉ० राधाकृष्णन् के शिक्षा सम्बन्धी विचारों का और अधिक अध्ययन होना चाहिए।

आधुनिक युग में भारतीय तथा पाश्चात्य शिक्षा–शास्त्रियों में ऐसे बहुत से विचारक हैं जिनके साथ डॉ. राधाकृष्णन् के शिक्षा–दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन करने पर शिक्षा–क्षेत्र में शोध कार्य हेतु नए आयामों की प्राप्ति हो सकती है। भारत के आधुनिक युग के प्रसिद्ध शिक्षा–दार्शनिक जैसे स्वामी विवेकानन्द, अरविन्द घोष, रविन्द्र नाथ टैगोर, महात्मा गाँधी तथा बिनोवा भावे आदि के नाम इस दृष्टि से विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन शिक्षाविदों के शैक्षिक विचारों का वेदांत के शिक्षा–दर्शन के साथ तथा आधुनिक भारतीय शिक्षा शास्त्रियों के शैक्षिक विचारों के साथ तुलनात्मक अध्ययन करने से शिक्षा के शोध–क्षेत्र में नई स्थापनाओं की संभावना बढ़ सकती है।

इसी प्रकार पाश्चात्य आदर्शवादी शिक्षा दर्शन तथा डॉ. राधाकृष्णन् के शिक्षा दर्शन में पर्याप्त निकटता है। अत: प्लेटो आदि आदर्शवादी शिक्षा विचारकों के साथ डॉ. राधाकृष्णन् के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन महत्वपूर्ण उपलब्धि होगी। शिक्षा के क्षेत्र में भावी शोधकर्ताओं के लिए पाश्चात्य आदर्शवाद तथा डॉ. राधाकृष्णन् के शिक्षा–दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

## सन्दर्भ सूची

१. अरविन्द.(१९४८),''ऐ सिस्टम ऑफ नैशनल एजुकेशन'', आर्य पब्लिकेशन हाऊस कलकत्ता।
२ बुच एम.बी. (१९७४),''ए सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन'', एम.एम. यूनिवर्सिटी बड़ौदा।
३ बुच एम.बी. (१९७८),''सेकण्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन'', सोसायटी फॉर एजुकेशन रिसर्च एंड डैवलपमैंट बड़ौदा।
४ बुच एम.बी. (१९८७),''थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन'' बड़ौदा ।
५ बुच एम.बी. (१९९१),''थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन'', खण्ड प्रथम व द्वितीय, एन.सी.ई.आर.टी. दिल्ली।
६ कम्पलीट वर्क आफ स्वामी विवेकानन्द अद्वैत आश्रम, अल्मोड़ा।

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com